8 गुलमर्ग की खिड़की से एक रात

मोहन राकेश
(जन्म : सन् 1925 ई. : निधन : सन् 1972 ई.)

मोहन राकेश का जन्म जालंधर (पंजाब) में हुआ था। इनके पिता व्यवसाय से वकील थे, परंतु उनकी साहित्य में बहुत रुचि थी। अत: राकेश को बचपन से ही घर में पर्याप्त साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और तत्पश्चात् डी.ए.वी. कॉलेज, जालंधर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक इन्होंने 'सारिका' कहानी पत्रिका का सफल सम्पादन किया और बाद में स्वतंत्र लेखन करते रहे। कहानी लेखन के साथ-साथ इन्होंने उपन्यास और नाटक भी लिखे थे। इनकी प्रमुख रचनाओं में 'इंसान के खंडहर', 'नए बादल', 'एक और आदमी' आदि कहानी संग्रह तथा ' अंधेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे-अधूरे' तथा 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं। मोहन राकेश मूलत: एक सफल कहानीकार तथा नाटककार हैं।

'गुलमर्ग की खिड़की से एक रात' 'परिवेश' से लिया गया है। इस यात्रा वृत्तांत में लेखक ने गुलमर्ग के प्राकृतिक सौंदर्य का स्वानुभूत विवरण प्रस्तुत किया है। गुलमर्ग का सारा वातावरण इनको अपने में समाया सा लगता है। 'गुलमर्ग' की एक रात' का अकल्पनीय सौंदर्य इनसे भुलाया ही नहीं जाता।

कुछ जगहें होती हैं जिन्हें आँख एक बार देखती है तो चौंक उठती है, फिर धीरे-धीरे परिचित होकर उदासीन हो जाती है। गुलमर्ग ऐसी जगह नहीं है।

मैं जब पहली बार गुलमर्ग गया, तो मुझे वहाँ कुछ भी असाधारण नहीं लगा-एक खुला सपाट मैदान, देवदारों के घने झुरमुट और बस! तब मैं घण्टे-भर में सारा गुलमर्ग देख आया था।

मगर बाद में महीनों वहाँ रहने पर एहसास हुआ कि पहली बार तो क्या, बाद में भी कभी उस स्थान को पूरा नहीं देख पाया-उसे पूरा कभी देखा ही नहीं जा सकता। शायद यही कारण है कि गुलमर्ग में रहकर वहाँ के साथ व्यक्ति की आत्मीयता धीरे-धीरे इतनी गहरी हो जाती है कि वह अपने को भी उस सपाट मैदान के एक हिस्से के रूप में ही देखने लगता है- काँपती तितलियों उठते बादलों और बर्फ से चमकती पहाड़ियों की तरह। दूसरी ओर वह पूरा विस्तार, जिसमें वह स्वयं भी रहता है, उसे अपने में समाया-सा लगता है- सूर्योदय और सूर्यास्त, दोनों सन्ध्याएँ, घना कोहरा, पीली धूप और सब-कुछ! इसलिए जब व्यक्ति गुलमर्ग से चलता है, तो एहसास होता है अपने से ही बिछुड़ने का- अपने उस रूप से जो कि इतना परिचित होते हुए भी सदा अपरिचित बना रह जाता है!

गुलमर्ग में सपने फूल बनकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर, आकाश में। आँखें मुग्ध होकर देखती रहती हैं और फूलों में नये-नये रंग भर जाते हैं, वातावरण में नयी-नयी कोंपलें फूट आती हैं। हर क्षण एक नये अनुभव, नये रोमांच की सृष्टि होती हैं।... बादलों के पोर्टिको के नीचे लोग बाँहें फैलाये घास पर बैठे हैं। दूर-दूर तक सैलानियों की पंक्तियाँ घोड़े दौड़ाती नज़र आती हैं। रंगों के कुछ बिन्दु हरियाली के पट पर जहाँ-तहाँ छिटके हैं। सहसा प्रकाश से नन्हीं-नन्हीं पारदर्शक बूँदे पड़ने लगती हैं। रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है। हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है। मैदान सुरमई आभा ओढ़ लेता है। अब चारों तरफ़ धुन्ध-ही-धुन्ध है और बेबस होकर फैली पगडण्डियों की पतली-पतली नरम बाहें। जब तक बादल बरसेगा, बाँहें फैली रहेंगी-ऐसी ही कोमल, विस्मृत और निढाल।

सूरज चमकेगा तो फूल में से नया सपना जन्मेगा। आकाश में बादलों के नन्हें-नन्हें द्वीप इधर-उधर भटकते फिरेंगे। भेड़ों और बकरियों के रेवड़ पगडण्डियों पर टँक जाएँगे। दिन तब रात की प्रतीक्षा करता-सा प्रतीत होगा। रात आएगी तो सब कुछ खामोश हो जाएगा-मैदान की वह खामोशी भी, जो दिन के समय इतनी वाचाल हो जाती है!

गुलमर्ग की वह रात मुझे कभी नहीं भूलेगी। मैं होटल की खिड़की में खड़ा था। दूर-बहुत दूर सामने से एक बरसती घटा मेरी तरफ़ बढ़ती आ रही थी। मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कब वह मुझ तक पहुँचे और मुझे अपने में लपेट ले। बरसती घटा में घिर जाने से बड़ा सुख मैंने बहुत कम जाना है। घटा ऊपर से घिर आये और व्यक्ति को छोटा करके उस पर छा जाए, यह इससे अलग स्थिति है। इस बार आती हुई घटा का हर संकेत मेरे सामने था और मैं उसके बराबर का होकर अपनी खिड़की में खड़ा उसे बुला रहा था कि आ... आ... आ, मैं

तुझसे कमज़ोर नहीं हूँ। हवा तेज़ थी, मगर घटा तेजी से नहीं बढ़ रही थी- हालांकि तूफ़ान बहुत उठा हुआ था। बार-बार ज़ोर की गरज होती थी जिससे धरती और आकाश की शिराएँ काँप जाती थी। बार-बार सामने के चित्रपट पर बिजली कौंधती थी-और प्रकाश का वह भयानक विस्फोट हर चीज़ को नंगा कर जाता था। मैं खुश था कि थोड़ी देर में ये बूँदे मेरे ऊपर बरसेंगी-बिजलियों का यह क़हर मेरे ऊपर टूटेगा। मैं बाँहें फैलाकर सामने से उसे अपने ऊपर लेने के लिए तैयार था।

मगर अचानक हवा रूक गयी। बढ़ता हुआ तूफ़ान जहाँ का तहाँ ठिठक गया और दूर ही पर कटे पक्षी की तरह दम तोड़ने लगा। बिजली की साँस रुकने लगी-और मेरी भी-क्योंकि हवा के रुक जाने से मुझे भी बहुत ऊँचे आसमान से नीचे आना पड़ा था। तूफ़ान का जोम उतर गया और उसके साथ ही मेरा भी। मैं उसके बराबर का कभी नहीं हो सका।

वे ऐसे क्षण थे जो जीवन में दो-एक बार ही आते हैं। गुलमर्ग में रहते हुए ऐसे क्षण हर किसी के जीवन में किसी-न-किसी रूप में अवश्य आते होंगे। तभी तो मुद्दत तक वहाँ रह चुकने पर भी कोई आकर्षण व्यक्ति को फिर खींचकर वहाँ ले जाता है। वरना वहाँ है क्या-एक खुला सपाट मैदान जहाँ ज्यादा गॉल्फ खेली जा सकती है! व्यक्ति क्यों बार-बार वहाँ जाना चाहता है? क्या गॉल्फ खेलने के लिए ही?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गुलमर्ग कश्मीर का एक सुन्दर प्राकृतिक रमणीय स्थान **तिगलिया** तिराहा, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों **रोमांचकी** आनन्द देनेवाली, हर्षित करनेवाली **पोर्टिको** बरामदा, ड्योढ़ी **रेबड़** झुंड **कहर** अत्याचार **दम तोड़ना** मर जाना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग का भौगोलिक वातावरण कैसा है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के साथ व्यक्ति की आत्मीयता बढ़ने का क्या कारण बताया है?
   (3) खिड़की के पास खड़ा लेखक बरसाती घटा को देखकर किस बात की प्रतीक्षा करने लगा?
   (4) तूफ़ान के एकाएक रूक जाने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ?
   (5) लेखक को किस बात का अफसोस हुआ?
   (6) लेखक ने गुलमर्ग की पगडण्डियों के लिए क्या उपमा दी?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) गुलमर्ग से विदा होते समय सैलानियों को कैसा अहसास होता है?
   (2) लेखक ने गुलमर्ग के दिन को वाचाल क्यों कहा?
   (3) सैलानी कब और क्यों सिहर जाते हैं?
   (4) लेखक की प्रतीक्षा असफल क्यों हुई?
3. **निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
   (1) लेखक ऐसा क्यों कहता है कि गुलमर्ग को कभी पूरा देखा नहीं जा सकता?
   (2) 'दिन में गुलमर्ग की शोभा' का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
   (3) प्रकाश, बादल तथा हवा के कारण गुलमर्ग दर्शन में आए रोमांच का वर्णन कीजिए।
4. **पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) गुलमर्ग में सपने फूलकर उगते हैं- हरियाली के आर-पार, लाल-लाल छतों के ऊपर आकाश में।
   (2) रंगीन बिन्दुओं का पूरा विस्तार एक बार सिहर जाता है और अपने को समेटने लगता है।

5. ‘हरियाली का सपना कुहासे के फूल में बदल जाता है’ - यह दृश्य किस समय का है?
(अ) प्रात:काल (ब) दोपहर (क) सायंकाल (ड) अर्धरात्रि

6. (1) उचित उपसर्ग जोड़कर उनके विरुद्धार्थी शब्द बनाइए :
साधारण, मान, उदार, रंग, स्मृति
(2) उचित प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाइए :
सुरमा, बरसात, तूफ़ान, चमक, विस्फोट
(3) उचित प्रत्यय जोड़कर संज्ञा बनाइए :
लाल, खामोश, कमजोर, आकर्षक

7. **वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
विस्फोट, आकर्षण, पारदर्शक, रोमांचक

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- राहुल सांस्कृत्यायन की ‘मेरी लद्दाख यात्रा’ पुस्तक पढ़िए।
- आपने जिन पर्यटन स्थलों की यात्रा की है, उनका वर्णन कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- किसी यात्रा का आयोजन करें।
- यात्रा वर्णनों का संकलन करवाइए।

●

9 निर्भय बनो

फणीश्वरनाथ रेणु

(जन्म : सन् 1921 ई. : निधन : सन् 1977 ई.)

प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार 'रेणु' का जन्म बिहार में वर्तमान बिहार के पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा उनके गाँव, विराटनगर (नेपाल) तथा वाराणसी में हुई। उन्होंने भारत तथा नेपाल के स्वाधीनता आंदोलनों में सक्रिय भाग लिया तथा कारावास भोगा। कुछ समय तक उन्होंने आकाशवाणी पटना में कार्य किया। अपने पहले उपन्यास ''मैला आँचल'' के प्रकाशन के साथ ही वे विख्यात हो गए। उसके पहले वे एक कहानीकार तथा रिपोर्ताज लेखक के रूप में साहित्य-जगत में सुपरिचित हो चुके थे।

'रेणु'जी की रचनाओं में उनका जीवन अनुभव मुखरता है। जीवन की सुरुपता-कुरुपता को मानवीय सहृदयता तथा पूर्ण तटस्थता के साथ उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। उनकी भाषा में लोक बोलियों के शब्दों का प्रयोग ध्यानाकर्षक है। भाषा में ताजगी और नयापन है। मैला आँचल, परती परिकथा, जुलूस, पल्टू बाबू रोड, कितने चौराहे आदि उनके प्रमुख उपन्यास तथा ठुमरी, अग्निखोर, एक आदिमरात्रि की महक आदि उनके प्रमुख कहानीसंग्रह हैं। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से सम्मानित किया था।

यह अंश उनके उपन्यास 'कितने चौराहे' के सातवाँ प्रकरण से लिया गया है। विद्यार्थी जीवन में ही मानवीय-सामाजिक मूल्यों के प्रति कथानायक मनमोहन का कैसे झुकाव होता है, इस अंश में उसका चित्रण है। शिक्षक इस पाठ से निर्भयता के गुण का विकास करने का प्रयास करेगा।

प्रियोदा !

प्रियव्रत राय मैट्रिक में पढ़ता है। स्कूल के सभी लड़के और मास्टर उसको प्यार करते हैं। स्कूल ही नहीं, उस छोटे-से कस्बे में उसको प्रायः सभी जानते हैं। हर रविवार की सुबह बगल में झोली लटकाकर 'संन्यासी-आश्रम' के लिए मुठिया वसूलने निकलता है- कभी अकेला, कभी साथियों के साथ। स्कूल का कोई छात्र या शिक्षक बीमार पड़ा कि प्रियोदा अपनी टोली के साथ उसके घर पर हाजिर। जब तक रोगी भला-चंगा न हो जाए, उसका दल सेवा में जुटा रहता है।

रोबी और कालू प्रियोदा के दल में हैं। उन लोगों ने मनमोहन को भी अपने साथ प्रियोदा के दल में शामिल कर लिया।

हर शनिवार को परमान के उस पार 'बालूचर' पर प्रियोदा के दल के सदस्य, स्कूल की छुट्टी के बाद जमा होते हैं। खेल-कूद, गाने-बजाने के अलावा प्रियोदा दुनिया-भर की खबर सुनाते हैं। रविवार का प्रोग्राम तय करते हैं, किस मुहल्ले में कौन जाएगा मुठिया वसूलने। किस बीमार की सेवा करने कौन-कौन जाएँगे।

उस दिन मनमोहन का परिचय देते हुए कालू ने कहा था, ''प्रियोदा! यह मोना-मनमोहन। खूब तेज लड़का है। 'क्लब' का सदस्य होना चाहता है।''

प्रियोदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखकर पूछा था, ''भारतवर्ष के एक ऐसे आदमी का नाम लो, जिसे लोग भगवान का अवतार समझते हैं।''

''महात्मा गांधी।''

''ठीक है। तुम पढ़-लिखकर क्या बनना चाहते हो?'' प्रियोदा का दूसरा सवाल।

मनमोहन चुप रहा। फिर बोला, ''वकील।''

सभी ठठाकर हँसे । लेकिन प्रियोदा गम्भीर ही रहे। बोले, ''ठीक है। बीमार लोगों की सेवा करना जानते हो?''

''सीख लेंगे।''

''शाबाश! यदि रोगी हैजा से पीड़ित हो?''

मनमोहन चुप रहा, क्योंकि हैजा के नाम से ही उसे डर लगने लगता है।

''गाना जानते हो?''

''जी।''

''तैरना?''

''जी नहीं।''

प्रियोदा ने सूर्यनारायण नामक सदस्य से कहा, ''सूरज! मोना तैरना नहीं जानता।''

''सीख जाएगा। एक दिन उठाकर पानी में फेंक दूँगा, खुद तैरने लगेगा।''

सभी हँसे। सूर्यनारायण पढ़ने में कमज़ोर हैं, लेकिन शरीर उसका मजबूत है। रोज एक सौ 'डंड-बैठक' करता है। उसके साथी 'सूरज पहलवान' कहते हैं, उसको। दल के सदस्यों को तैरना सिखलाना उसी का काम है।

उस दिन सभी ने नए सदस्य मोना, यानी मनमोहन से गीत सुनने की इच्छा प्रकट की। मनमोहन पहले लजाया, किन्तु जब प्रियोदा ने आग्रह किया तो उसने खखारकर गला साफ किया। कौन गीत गाये वह? उसने शुरू किया।

''राम रहीम न जुदा करो भाई

दिल को सच्चा रखना जी...।''

गीत समाप्त होने के बाद प्रियोदा बोले, ''वाह! बहुत मीठा गला है तुम्हारा! कालू, तुम 'प्रभातफेरी' वाले दोनों गीत मोना को सिखा देना।''

सूरज पच्छिम की ओर झुक गया। बालूचर पर लाली उतर आई। परमान की धारा पर डूबते हुए सूरज की अंतिम किरण झिलमिलाई। पखेरू दल बाँधकर बाँस-वन की ओर लौटने लगे। प्रियोदा के दल के सभी सदस्य पंक्ति बाँधकर लौटे। पुल के पास एक गाड़ीवान तन्मय होकर गीत गा रहा था- ''भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला गरीब'क दीन।''

सूरज ने भी उसी सुर में सुर मिलाकर गाना शुरू किया- ''एक टा जे लोटा छल, बेटा छल तीन-पनियाँ पीबैत काल लोटा लेलक छीन...''

कृत्यानन्द झा ने कहा, ''विद्यापति की 'लाचारी' है।''

''लाचारी?''

''लाचारी।''

-ट्रट्ठाँय!...

बालूचर के उस पार से किसी ने फायर किया। एक पखेरू बालू पर गिरकर छटपटाने लगा। उसका जोड़ा विकल होकर बहुत देर तक रोता रहा। मटमैले अन्धकार में एक अर्दलीनुमी आदमी दौड़ा हुआ आया और मरी हुई चिड़िया के डैने को पकड़कर चिल्लाया, ''मिल गया हुजूर!''

इब्राहीम बोला, ''सब-डिप्टी साहब का अर्दली है। साला, भारी खचड़ा है।''

प्रियोदा के मुँह से अचानक निकला, ''हॉल्ट!''

तब इब्राहीम को अपनी गलती का एहसास हुआ। दल का नियम है कोई सदस्य किसी किस्म का अपशब्द या गाली मुँह से नहीं निकालेगा। इब्राहीम ने तुरंत सिर झुकाकर दल के नायक प्रियोदा और सदस्यों से माफ़ी माँगी, ''बात यह है कि साले ने...।''

सभी हँसे। प्रियोदा ने गंभीर होकर कहा, ''इब्राहीम, यह तुम्हारी आठवीं गलती है, 'दस' होते ही हम तुम्हारे साथ नहीं रहेंगे।''

इब्राहीम ने पूछा, ''लेकिन सरकारी अफ़सरों को गाली देने में क्या हर्ज है?''

''तुम्हारा मुँह खराब होगा। उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा।''

''मगर वे जो गाली देते हैं?''

''वे ही क्यों, बहुत लोग गालियाँ बकते हैं।''

''नहीं प्रियोदा, आप इब्राहीम को नहीं समझा सकिएगा। वह महीन बात देरी से बूझता है। मैं समझा देता हूँ। देखो... इब्राहीम! यदि 'क्लब' का मेम्बर रहना है तो इसके 'रूल्स' को मानना होगा। नियम है कि कोई सदस्य आपस में बातचीत के सिलसिले में भी कोई खराब शब्द नहीं बोलेगा। जानते हो न?... बस। बात खत्म।''

'सहुआइन-धर्मशाला' के पास आकर सभी ने एक-दूसरे से विदाई ली। कालू ने कहा, ''मोना, तू रास्ते में डरेगा, मैं जानता हूँ। चल, मैं पहुँचा दूँ।''

प्रियोदा ने कहा, ‘‘मोना डरता है? मैं उसे पहुँचा दूँगा। तू घर जा कालू।’’

रास्ते में प्रियोदा चुप रहे। एक सूनी जगह पर आकर रुक गए।... सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े पीपल के पेड़। दोनों ओर बहुत दूर तक खंडहर और मैदान। पास के एक उजड़े हुए मकान की ओर इशारा कर प्रियोदा ने कहा, ‘‘जानते हो, इस घर में कभी मुर्दों की चीर-फाड़ होती थी- पोस्टमार्टम-हाउस था यह। इसीलिए, लोगों को डर है कि आसपास के पेड़ों पर भूत-पिशाच किलकिल करते रहते हैं, मैदान में प्रेतनियाँ नाचती हैं- संतालियों की तरह झुंड बाँधकर।... क्यों, डरने लगा?’’

‘‘अकेले यहाँ आ सकते हो?’’

‘‘जी नहीं।’’

प्रियोदा हँसे। बोले, ‘‘देख मोना, भूत-प्रेत ऐसे आदमी को कभी नहीं तंग करता, जो ‘दस’ काम करता हो। तुम्हारी उम्र में मैं भी डरता था। मेरे गुरु महाजन ने मुझसे हँसकर कहा कि ‘दस’ का काम करनेवाला तो खुद ‘भूत’ होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?... चलो, शुरू करो तो वह गाना-राम रहीम ना...’’

मनमोहन गाने लगा, ‘‘राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी-ई-ई-ई!!’’

शब्दार्थ और टिप्पणी

परमान एक नदी का नाम **बालूचर** रेतीला नदी पट **जुदा** अलग **आग्रह** अनुरोध फ़रमाइश, हठ **पखेरू** पंखवाले, पक्षी **दल** झुंड, टीली **पंक्ति** कतार **तन्मय** तल्लीन, समाधिस्थ **नाचारी** एक लोकगीत **विकल** व्याकुल **हॉल्ट** रुको **हर्ज** नुकसान **रुल्स** नियम **अपशब्द** गाली, बुरा शब्द **संताल** एक आदिवासी जाति **खचड़ा** अड़गेबाज, मूर्ख

मुहावरे

मुठिया वसूलना किसी नेक काम के लिए मुट्ठीभर अनाज की भीख माँगना **भला चंगा** स्वस्थ **सिर से पैर तक देखना** भली भाँति देखना **महीन बात** सूक्ष्म बात

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**
   (1) प्रियोदा को सभी लोग क्यों प्यार करते है?
   (2) प्रियोदा के दल के तीन सदस्यों के नाम बताइए।
   (3) प्रियोदा की टोली कौन-कौन से सेवा कार्य करती है?
   (4) मनमोहन को तैरना सिखाने की जिम्मेदारी किसे सौंपी गई?
   (5) इब्राहीम ने किस बात के लिए माफ़ी माँगी?
   (6) अपशब्द न बोलने के बारे में क्लब का क्या नियम था?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**
   (1) प्रियोदा के दल के सदस्य शनिवार की शाम को कहाँ पर एकत्र होते हैं?
   (2) स्कूल की छुट्टी के बाद सभी सदस्य मिलने पर क्या करते हैं?
   (3) मनमोहन ने प्रियोदा के पहले प्रश्न के उत्तर में किस भारतीय महापुरुष का नाम लिया?
   (4) पक्षी को किसने गोली मारी थी?
   (5) प्रियोदा के मुँह से ‘हॉल्ट’ क्यों निकला?
   (6) सड़क के दोनों ओर कौन-से वृक्ष थे?

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) कस्बे के अधिकांश लोग प्रियोदा और साथियों को क्यों पहचानते थे?

(2) प्रियोदा की टोली शनिवार को स्कूल से छूटने के बाद क्या करती है?

(3) मनमोहन को तैरता सिखाने के बारे में सूर्यनारायण ने क्या कहा?

(4) पुल के पास गाड़ीवान क्या कर रहा था?

(5) मनमोहन का भय दूर करने के लिए प्रियोदा ने क्या किया?

(6) भूत-प्रेत के बारे में प्रियोदा ने मनमोहन से क्या कहा?

(7) प्रियोदा की टोली का रविवार को क्या कार्यक्रम होता था?

4. **सविस्तार समजाइए :**

(1) सूरज पश्चिम की ओर झुक गया।

(2) दस और देश का काम करनेवाला तो खुद भूत होता है- उसको भूत क्या कर सकता है?

(3) राम रहीम ना जुदा करो भाई, दिल को सच्चा रखना जी...

(4) भोला गरीबक दीन-पहिया हरब भोला...

5. **सही जोड़े मिलाइए :**

मनमोहन	पहलवान
प्रियव्रतराय	खचड़ा
सूर्यनारायण	एक नदी
डिप्टी का अर्दली	मैट्रिक का विद्यार्थी
परमान	हैजे से डरनेवाला

6. **शब्द समूहो के लिए एक-एक शब्द लिखिए :**

(1) दूसरों के किए हुए उपकार को माननेवाला...

(2) दूसरों के किए गए उपकार को न माननेवाला...

(3) मुर्दों के चीर-फाड़ की जगह.....

(4) जहाँ बीमारों को भर्ती करके इलाज होता है...

7. **सूचनानुसार उत्तर दीजिए :**

(क) विरुद्धार्थी शब्द लिखिए:

गरीब, प्यार, स्वस्थ, गलत, उजड़ा

(ख) दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए:

सुबह, शाम, दल, कमज़ोर, मकान

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- यदि उपलब्ध हो सके तो 'कितने चौराहे' उपन्यास पढ़िए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- निर्भयता के गुणवाली कहानियाँ ढूँढ़कर विद्यार्थियों को पढ़कर वर्ग में सुनाइए।

●

कहावतें

हम लोगों को उचित हैं कि दूसरों के लिए जिएँ। जो तन-मन-धन से परोपकार करते हैं, वे ही धन्य हैं। यदि अपने के लिए जन्म गँवा दिया तो क्या किया? **अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।**

उपर्युक्त अनुच्छेद में 'अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है'- कहावत है। जो अर्थ का पूर्ण रूप से स्पष्ट करनेवाला स्वतंत्र वाक्य है। जिसका उपयोग किसी कही हुई बात के समर्थन में प्रयुक्त होता है।

कहावत का संबंध किसी-न-किसी घटना से हुआ करता है। लोग उस घटना से संबंधित कोई पंक्ति गढ़ लिया करते हैं और जब कभी वैसा प्रसंग आता है, तब वे उस पंक्ति को दुहराकर घटनाजनित बातों की पुष्टि करते हैं। जैसे- यदि कोई किसी कार्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत करने की बात करे और प्रस्तुति करण का मौका देने पर कोई बहाना बनाए तो उसके बारे में कहा जाएगा- 'नाच न जाने आँगन टेढा'। अर्थात् जब कोई विशेष अनुभव सामान्य जन-जीवन में सबके मन और बुद्धि पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ हो जाता है तब उस अनुभव का कथन कहावत का रूप धारण कर लेता है।

कहावत लोक से संबंधित है इसलिए इसका नाम 'लोकोक्ति' भी है । 'लोकोक्ति' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है- लोक+उक्ति। जिसका अर्थ है- 'लोक' में प्रचलित उक्ति या कथन। ऐसा कथन जो व्यापक लोक अनुभव पर आधारित हो, 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहलाता है।

लोकोक्ति या कहावत मानव के अनुभवों की सुंदर अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान पीढ़ी को पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती है। उसमें गागर में सागर अथवा बिंदु में सिंधु भरने का अद्‌भुत गुण होता है। इनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाता है।

प्रमुख कहावतें (लोकोक्तियाँ), उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग :

1. अंत भले का भला - (अच्छे काम का परिणाम अच्छा होता है) - शैलेश कष्ट सहकर भी ईमानदारी से परिश्रम करता है इसी कारण वह आज ऊँचे पद पर पहुँच गया। इसलिए कहा गया है- अंत भले का भला।
2. अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा- (अयोग्य शासक के कारण कुप्रशासन)- उस कार्यालय का कोई कर्मचारी काम नहीं करता, क्योंकि वहाँ का अधिकारी ही भ्रष्ट है। चारों तरफ 'अंधेरी नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा' वाली बात है।
3. अंधी पीसे कुत्ता खाय- (काम करे कोई, फल कोई खाए)- पिताने दिन-रात कमाई करके धन इकट्ठा किया और उसका बेटा मौज उड़ाते-उड़ाते नहीं थकता। इसी को कहते हैं- अंधी पीसे कुत्ता खाय।
4. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत- (हानि हो जाने पर पछताने से क्या लाभ)- पहले तो बहुत समझाने पर भी तुमने परिश्रम नहीं किया अब असफल हो गये तो आँसू बहाने लगे। क्या तुम नहीं जानते- अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
5. मार के पीछे भूत भागे : (किसी की तरह से समस्या का हल करना)
   जब समस्या हद से बढ़ जाती है, तब सरल उपाय के बजाय कठिन या शिक्षात्मक रवैया अपनाना ।
6. आँख का अंधा नाम नयनसुख- (गुणों के विरुद्ध नाम होना) - उसका नाम तो है वीरसिंह, मगर वह रात में चूहे से डर गया। उसे देखकर तो यही कहावत याद आती है- आँख का अंधा नाम नयनसुख।
7. आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास-(अच्छा काम छोड़कर महत्त्वहीन काम में लग जाना)- तुम्हें छात्रावास में इसलिए भेजा था कि तुम परीक्षा में अव्वल आ सको पर तुमने तो यहाँ रहकर भी बेकार की बातों में समय बरबाद करना शुरू कर दिया। इसे कहते हैं आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।
8. एक पंथ दो काज- (एक साधन से दो काम होना)- मैं दिल्ली नौकरी का साक्षात्कार देने के लिए गया था। वहाँ लाल किला आदि भी देख आया। इसे कहते हैं- एक पंथ दो काज।

9. कंगाली में आटा गीला- (मुसीबत में और मुसीबत आना)- व्यापार हेतु कल बैंक से रुपया उधार लाया था वह भी चोरी हो गया। सच है कंगाली में आटा गीला।

10. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली- (दो व्यक्तियों की स्थितियों में अंतर)- उस साधारण गायिका की तुलना लता मंगेशकर से करना उचित नहीं- कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली।

11. ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया- (भाग्य की विचित्रता) - कुछ लोग दूसरों के लिए मंदिर तथा धर्मशालाएँ बनवातें हैं तथा कुछ अपने लिए एक समय का भोजन नहीं जुटा पाते। इसे कहते हैं ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।

12. एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा- (एक दोष के साथ-साथ दूसरा दोष भी लग जाना) - वह शराबी तो था ही, जुआ भी खेलने लगा। इसे कहते हैं एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा।

13. काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती- (छल, कपट तथा चालाकी से एक ही बार काम निकलता है)- एक बार तो तुम मुझे धोखा देकर रुपए ले जा चुके हो, अब मैं तुम्हारी चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आ सकता क्योंकि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती।

14. खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे- (लज्जित या अपमानित होकर इधर-उधर रोष प्रकट करना) - जब पुलिस तुम्हारी पिटाई कर रही थी तब तो तुम कुछ भी न बोले, अब मुझ पर बरस रहे हो। किसी ने ठीक ही कहा है- खिसियानी बिल्ली खंभा नाचे।

15. घर की मुर्गी दाल बराबर - (आसानी से प्राप्त हुई वस्तु को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता)- उसका बड़ा भाई डॉक्टर है मगर वह बीमार हुआ तो शहर से दूसरा डॉक्टर बुलाया गया। इसे कहते हैं- घर की मुर्गी दाल बराबर।

16. चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात- (थोड़े समय का सुख)- धन-दौलत, ऐश्वर्य तथा जवानी पर गर्व नहीं करना चाहिए। जानते नहीं संसार की रीति-चार दिनों की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

17. छछूँदर के सिर में चमेली का तेल- (अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज मिल जाना) - मनोज को न पढ़ाने का काम आता है न वह बी.एड्. है, पर आज वह शिक्षक है। ऐसे लोगों के लिए यह कहावत प्रयोग की जाती है- छछूँदर के सिर में चमेली का तेल।

18. जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय- (जिसका रक्षक भगवान है उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता)- कार गहरी खाई में गिर गई किंतु सभी यात्री सकुशल हैं। सच है जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।

19. डूबते को तिनके का सहारा- (विपत्ति में जरा सी भी मदद किसी को उबार सकती है)- वह जीवन से निराश हो चुका है तुम थोड़ा-सा उत्साह दे दो शायद उबर जाए, डूबते को तिनके का सहारा काफी होता है।

20. नाम बड़े दर्शन छोटे- (प्रसिद्धि अधिक किंतु तत्त्व कुछ भी नहीं)- तुम्हारे विद्यालय की बहुत ही प्रशंसा सुन रखी थी, पर आकर देखा तो पढ़ाई का स्तर कुछ भी नहीं। इसीको कहते हैं- नाम बड़े दर्शन छोटे।

21. नाच न जाने आँगन टेढ़ा- (गुण न होने पर बहाना बनाना या दूसरों को दोष देना)- अरे भाई, तुम्हें गाना तो ठीक से आता नहीं और कभी तुम बता रहे हो हारमोनियम में। इसी को कहते हैं- नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

22. पर उपदेश कुशल बहुतेरे- (दूसरों को उपदेश देने में सब चतुर होते हैं)- मंदिर में बैठकर उपदेश देते हो कि मदिरापान पाप कर्म है और घर में बैठकर स्वयं मदिरापान कर रहे हो। इसीको कहते है- पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

23. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी- (आनेवाला दु:ख आकर ही रहता है) - तुम अपने अपराधों को कब तक छुपाते रहोगे? आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

24. मन चंगा तो कठौती में गंगा- (हृदय की पवित्रता हो तो घर में ही तीर्थयात्रा का लाभ मिल सकता है)- जिसका मन पवित्र है, उसे तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि किसीने सच ही कहा है- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

25. होनहार बिरवान के होत चीकने पात- (योग्य व्यक्ति के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं)- गोपालदास नीरजने पहली कविता दस वर्ष की उम्र में ही लिख दी थी। सच है- होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

26. हाथ कंगन को आरसी क्या?- (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं)- तुम कहते हो कक्षा में पच्चीस छात्र हैं मैं कहता हूँ तीस छात्र हैं। चलकर कक्षा में गिन लेते हैं- हाथ कंगन को आरसी क्या?

●

10	# भारत-गौरव

मैथिलीशरण गुप्त

(जन्म : सन् 1886 ई. : निधन : सन् 1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। बाल्यावस्था से ही कविता में इनकी रुचि थी। इनकी प्रारंभिक रचनाएँ हिन्दी की पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुईं। महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन ने इनके कवि-व्यक्तित्व का परिष्कार कर दिया। राम-भक्ति में सराबोर पारिवारिक संस्कारों ने इन्हें राम-काव्य लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों से प्रभावित होकर इनकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और स्वदेश गौरव की गूंज सुनाई देने लगी। इसी कारण ये राष्ट्रकवि के संबोधन से प्रसिद्ध हुए। 'भारत-भारती', 'साकेत', 'पंचवटी', 'यशोधरा', 'विष्णुप्रिया' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। हिन्दी साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अनुपम योगदान के कारण इन्हें 1954 में 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा राज्यसभा का सदस्य भी मनोनीत किया गया।

प्रस्तुत काव्य 'भारत-भारती' से लिया गया है जिसमें तीन खंड में देश का अतीत, वर्तमान और भविष्य चित्रित है। गुप्तजी ने भारत के अतीत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया है और इन्हीं विशेषताओं के आधार पर उसे विश्व के सिरमौर पद पर प्रतिष्ठापित किया है। इस काव्य में कवि ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गौरव गान किया है। इसके साथ-साथ आर्यों के महान जीवन आदर्शों का भी चित्रण किया है।

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है॥

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है?
विधि ने किया नर सृष्टि का पहले यही विस्तार है।

यह पुण्यभूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं,
विद्या, कला-कौशल सबके जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े,
पर चिह्न उनकी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे;
वे स्वार्थ-रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार-हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?

शब्दार्थ और टिप्पणी

गौरव सम्मान, प्रतिष्ठा **भू-लोक** संसार, दुनिया **लीला स्थल** महान पुरुषों की क्रीड़ा भूमि **उत्कर्ष** उन्नति, प्रगति **सिरमौर** श्रेष्ठ **पुरातन** प्राचीन **भव-भूति** संसार का वैभव **विधि** ब्रह्मा, सृष्टि की रचना करनेवाला देवता **आचार्य** शिक्षक, आदर्श आचार को आचरण में लानेवाला **अधोगति** अवनति, दयनीय दशा **स्वार्थरत** केवल अपना ही लाभ देखनेवाला **मदिरा** शराब, मद्य **संसार** दुनिया **निश्चेष्ट** निष्क्रिय, चेष्टारहित

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) भारत को प्रकृति का लीला-स्थल क्यों कहा है?

(2) भारतवर्ष को वृद्ध क्यों कहा गया है?

(3) विधाता ने नर-सृष्टि का विस्तार कहाँ से किया है?

(4) आर्य किन-किन विषयों के आचार्य थे?

(5) आर्यों की संतान आज किस स्थिति में जी रही है?

(6) आर्यों की क्या विशेषताएँ रही हैं?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) गुप्तजी ने भारत के गौरव को किस रूप में हमारे सामने रखा है?

(2) भारतवासियों के बारे में गुप्तजी क्या कहते हैं?

3. योग्य विकल्प द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(1) भारत को .... कहा गया है ।

(क) ऋषिभूमि (ख) तपोभूमि (ग) वीरभूमि

(2) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का .... है।

(क) तिलक (ख) आभूषण (ग) सिरमौर

(3) विधि ने .... का विस्तार यहीं से किया है।

(क) नरसृष्टि (ख) जीवसृष्टि (ग) पशुसृष्टि

(4) भारत के निवासी .... हैं।

(क) मंगोल (ख) आर्य (ग) शक

(5) आर्यों की संतानों की आज .... हो गई है।

(क) अधोगति (ख) उन्नति (ग) अवगति

4. 'क' विभाग को 'ख' विभाग के साथ उचित रूप में जोड़ते हुए पूरा वाक्य लिखिए :

'क'	'ख'
(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का	(1) उत्कर्ष है।
(2) विद्या कला कौशल के	(2) प्रथम भंडार है।
(3) सम्पूर्ण देशों से अधिक भारत का	(3) सिरमौर है।
(4) भगवान की भव-भूति का	(4) दुनिया में कोई दूसरा नहीं है।
(5) भारत जैसा पुरातन देश	(5) आर्य हैं।
(6) भारत के निवासी	(6) प्रथम आचार्य आर्य हैं।

5. भाव स्पष्ट कीजिए :

(1) वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

(2) भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।

6. शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :

अधोगति, वृद्ध, पुरातन, प्रथम, विस्तार, पुण्यभूमि, उत्कर्ष, उच्च

7. शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :

हिमालय, गंगा, गिरि, भूमि, विश्व, मदिरा

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- भारत-गौरव से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।
- 'भारत देश' पर एक निबंध लिखिए।

●

11 एक यात्रा यह भी

रामदरश मिश्र
(जन्म : सन् 1924)

रामदरश मिश्रजी हिन्दी साहित्य के प्रथम कोटि के साहित्यकार है। आपने कहानियाँ, काव्य एवं उपन्यास आदि क्षेत्रों में अपनी कलम चलाई है। आपके बहुचर्चित उपन्यास हैं- जल टूटता हुआ और 'पानी के प्राचीर'। आपकी कविताओं के संग्रह हैं- 'बैरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गई है धूप', 'जुलूस कहाँ जा रहा है?', 'आम के पत्ते'। आपके कहानी संग्रह हैं- 'खाली घर', 'बसंत का एक दिन', 'इकसठ कहानियाँ', तथा 'मेरी प्रिय कहानियाँ'। 'आम के पत्ते' काव्य संग्रह को व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया है। आपका हिन्दी अकादमी के शिखर सम्मान एवं उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के भारतभारती पुरस्कार से प्रतिष्ठित किया गया है।

'एक यात्रा यह भी'- कहानी में रिक्शावाले से परिचित होने पर उसके जीवन की घटनाओं से नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण देखकर तथा जीवन में उतारे गए कर्तव्यबोध से प्रेरणा प्राप्त होती है- स्त्रीसम्मान, स्त्री सुरक्षा एवं आत्मीयतापूर्ण संबंधों को खूबी से प्रस्तुत किया गया है जो अत्यंत प्रेरक है।

मैं बहुत यात्रा-भीरु हूँ। यात्रा पर निकलते समय डर बना होता है कि पता नहीं कैसे-कैसे लोगों से पाला पड़ेगा। सबसे बड़ी असहजता तो अनुभव होती है अंट-शंट किराया माँगनेवाले ऑटोवालों से। नए शहर में कैसे-कैसे लोग-मिलेंगे, यह चिंता भी बनी होती है।

तो इस बार एक डॉक्टर से मिलने के लिए ग्वालियर जाना पड़ गया। पत्नी साथ थी, इसलिए आश्वस्ति बनी हुई थी। स्टेशन पर उतरते ही ऑटोवाले पीछे पड़ गए। हम चुपचाप आगे बढ़ते रहे। एक नवयुवक ऑटोवाला साथ लग गया। हम कुछ बोले बिना आगे बढ़ते रहे कि उसकी आवाज आई, ''बाबूजी, आप आखिर कहीं जाएँगे ही और कोई ऑटो करेंगे ही, तो फिर मेरा ऑटो क्यों नहीं?'' उसकी जिद और आवाज में कुछ ऐसा आकर्षण महसूस हुआ कि मैंने स्वीकृति दे दी।

वह प्रेम-भरी बातें करता रहा और हमें डॉक्टर के यहाँ पहुँचा दिया। उसके द्वारा बताए वांछित पैसे देकर डॉक्टर के घर की कॉल-बेल बजाई। ज्ञात हुआ कि डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी है।

ऑटोवाला बिना हमारे कहे हमारा इंतजार कर रहा था। हमें नई जगह पर पहुँचा दिया। मैंने पूछा, ''कितने पैसे दे दूँ?''

बाबूजी, ''जो इच्छा हो दे दीजिए। वैसे डॉक्टर के घर से यहाँ तक का किराया तो अतिरिक्त हो गया न।''

उसने पूछा, ''बाबूजी यहाँ से कहाँ जाएँगे?'' मैंने होटल का नाम बता दिया और कहा, ''भाई, तुम जाओ, यहाँ देर लग सकती है।''

वह कुछ बोला नहीं। हम डॉक्टर के पास चले गए। घंटा भर बाद निकले तो देखा, वह वहीं खड़ा था। अब हमें महसूस होने लगा था कि यह ऑटोवाला कुछ और है। वह हमारे भीतर घर करता गया। होटल पर छोड़कर उसने पूछा, ''फिर कब आऊँ?''

''यानी''

''यानी आप शहर में घूमेंगे-फिरेंगे न? आपको जहाँ जाना होगा, ले चलूँगा। वैसे यहाँ कब तक हैं?''

''कल शताब्दी से लौटेंगे।''

''तो आपको घुमाने के लिए कब आ जाऊँ?''

''भई, आज तो थके हैं। आराम करेंगे, कल घूमेंगे।''

''ठीक है बाबूजी, यह रहा मेरा मोबाइल नंबर, मुझे फोन करके बुला लीजिएगा।''

''अरे, तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं।''

''मोहन।''

''मोहन। अच्छा नाम है।''

दूसरे दिन घूमने का कार्य शुरू हो गया। वह बहुत प्रेम से एक के बाद एक स्थान दिखाता गया। मुझे

'बाबूजी' और पत्नी को 'अम्माँ' नाम से संबोधित करता रहा। घूम-घूमाकर होटल पर लौटे तो चाय पीने के लिए उसे भी कमरे में बुला लिया। वह बहुत संकोच के साथ आया। चाय-पान के साथ हमारी पारिवारिक वार्ता शुरू हो गई। पत्नी ने पूछा, ''बेटे, तुम ग्वालियर के हो?''

''नहीं अम्माँ! मैं मूलत: आगरा का हूँ। यहाँ आना पड़ गया।''

हमें लगा कि वह यह कहते-कहते कुछ भर आया है। इसलिए चुप रहे, लेकिन वह स्वयं बोलने लगा, ''आगरा में अपना घर है। माँ-बाप तो बचपन में ही गुज़र गए, बड़े भाई ने मेरी परवरिश की। भाई वकील हैं। मैं भी बी.ए. पास हूँ। कोई नौकरी खोज रहा था कि...''

एक चुप्पी सी छा गई। हमें लगा कि इसके साथ कोई अवांछित घटना घटी है। उसे छेड़ा नहीं, किंतु उसने फिर कहना शुरू किया, ''मैं नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। एक दिन भटककर लौट रहा था कि रास्ते में एक परिचित लड़की मिल गई, बदहवास सी, घिघियाती हुई बोली, ''मोहन, मुझे बचा लो।''

''क्यों, क्या हुआ?''

''मेरे माँ-बाप एक अधेड़ के हाथ मुझे बेच रहे हैं। मैं कुएँ में गिरकर जान दे दूँगी, किंतु उस खूसट अधेड़ के साथ नहीं जाऊँगी।''

''मैं बहुत असमंजस में पड़ गया। क्या करूँ? कर भी क्या सकता हूँ। मुझे लगा कि स्टेशन चलना चाहिए। वहाँ उसे ले गया और थानेदार से हकीकत बयान की। वे कुछ देर सोचते रहे कि क्या किया जा सकता है।''

थानेदार साहब बोले, ''इसकी एफ.आई.आर. लिखकर इसके माँ-बाप को हवालात में बंद कर देता, लेकिन फ़िलहाल चिंता इस लड़की की है कि आखिर इसके लिए क्या किया जाए?''

एक छोटी सी चुप्पी के बाद वे एकाएक बोले, ''तुम्हारी शादी हो गई है?'' मैंने न में सिर हिलाया।

तो बोले, ''तुम इससे शादी क्यों नहीं कर लेते?''

मैं तो इस आकस्मिक प्रस्ताव से चकरा गया, किंतु कुछ पल बाद लगा कि इसमें बुराई क्या हैं। मैंने कहा, ''सर, इससे तो पूछ लीजिए।''

थानेदार ने उससे पूछा तो उसने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। ''लेकिन।''

''लेकिन क्या मोहन?''

''बाबूजी, लेकिन यह कि भाभी अपनी बहन से मेरी शादी कराना चाहती रहीं। बात तय हो चुकी थी।''

''फिर?''

''बाबूजी, मैंने सोचा, भाभीजी की बहन से तो कोई भी अच्छा आदमी शादी कर लेगा। वहाँ कोई संकट नहीं है, लेकिन इस लड़की की तो जिंदगी खतरे में है। लड़की सुंदर भी है, परिचित भी और सबसे अहम बात यह कि वह संकट मैं है। इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी। लेकिन...''

''फिर लेकिन?''

''हाँ, अब समस्या यह कि विवाह एकदम तो न हो जाएगा। यदि लड़की घर गई तो फिर वही बेच दिए जाने का संकट। मैं साथ ले जाऊँ तो भैया-भाभी तो नाराज होंगे ही, इसके माँ-बाप मेरे ऊपर लड़की भगाने का केस कर देंगे। जब मैंने थानेदार के सामने यह समस्या रखी तो वे बोले, कुछ दिन के लिए इसे नारी-निकेतन में रखवा देता हूँ। लड़की से माँ-बाप के खिलाफ शिकायत लिखवाकर रख लेता हूँ।''

''पंद्रह दिन बाद उन्होंने मंदिर में उससे मेरी शादी करवा दी।''

मैंने कहा, ''मोहन, ऐसे थानेदार कहाँ होते हैं। मुझे तो इस घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा है। लगता है, कथा सुन रहा हूँ।''

''आप सही कह रहे हैं बाबूजी, लेकिन यह थानेदार कवि भी है। कवि-सम्मेलनों में कविताएँ पढ़ता है और इसकी कविताएँ मानवीय संवेदना से भरी होती हैं।''

''हाँ, तब ठीक है। भाई, हर क्षेत्र में कोई-न-कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है। हाँ, तब।''

''तब यह कि मेरे भाई-भाभी मुझसे खफा हो गए और हमें घर से निकाल दिया। एक तो मैंने उनकी साली

से शादी नहीं की, दूसरे जिस लड़की से की, वह किसी और जाति की है।''

''तो तुम लोग ग्वालियर आ गए।''

''हाँ, बाबूजी, आगरा में हमारा निबाह होना कठिन था। पराए शहर में भले ही कोई अपनापन न हो, किंतु यह परायापन उस अपनेपन से अच्छा है न, जो दिन-रात अप्रीतिकर व्यवहार बनकर तन-मन को उद्विग्न करता रहे।''

''हाँ, सही कह रहे हो।''

''तो यहाँ कोई नौकरी तो रखी नहीं थी। बस ऑटो का दामन थाम लिया और उसी के सहारे चल रहा हूँ।''

''वास्तव में तुम बहुत बड़े हो मोहन। बड़े-बड़े लोग तो नारी-हित में बड़े-बड़े लैक्चर देते हैं, लेख-कविताएँ लिखते रहते हैं, किंतु अपने व्यवहार में नहीं उतारते। लेकिन तुमने तो बहुत सहज भाव से एक लड़की को दुर्दशाग्रस्त होने से बचा लिया और अपने जीवन के साथ उसे सम्मानपूर्वक लगा लिया।''

''बाबूजी, इस कार्य से मुझे भी बहुत संतोष मिला। मैंने तो एक बार उसका उद्धार किया, किंतु वह तो प्राय: मुझे संकटों से उबारती रहती है।''

मोहन की यह कहानी हम पर छा गई और वह हमारे मन में कितना बड़ा हो गया।

गाड़ी का समय हो रहा था। मोहन हमें लेकर स्टेशन आ गया। उसे मैं पाँच सौ रुपए का नोट देने लगा। वह बोला, ''रहने दीजिए बाबूजी।''

''अरे यह तुम्हारा पारिश्रमिक है, कोई दान थोड़े ही दे रहा हूँ।''

''बाबूजी, मैंने माँ-बाप का प्यार नहीं पाया। कल से ही लग रहा है कि मुझे माँ-बाप मिल गए हैं। इस सुख के आगे पैसे का तो कुछ भी मोल नहीं है। पैसा तो और लोगों से कमाँ ही लेता हूँ।''

''बेटे, लेकिन मेरी भी तो सोचो। मैं बेटे का शोषण कैसे कर सकता हूँ?''

''लेकिन यह तो बहुत है। इतना लूँगा तो आपका शोषण हो जाएगा।'' यह कहकर वह पाँच सौ का नोट लेकर तीन सौ वापस करने लगा।

बोला, ''मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी। हाँ, जब भी ग्वालियर आइएगा, मुझे बुला लीजिएगा। मेरा फोन नंबर तो आपके पास है ही।''

''लेकिन मेरी एक शर्त है।''

''वह क्या बाबूजी?''

''ये पाँच सौ रुपए चुपचाप तुम्हें लेने ही पड़ेंगे।''

उसने तीन सौ रुपए अपनी जेब में रख लिये। जैसे कह रहा हो 'यह कैसी शर्त आपने रख दी बाबूजी।' कुछ क्षण बाद बोला, ''बाबूजी, आपका फोन नंबर तो मेरे फोन पर आ ही गया है। कभी-कभी फोन करता रहूँ क्या?''

''हाँ-हाँ भाई, शौक से। मुझे अच्छा लगेगा।''

''लेकिन आपका नाम तो मैंने पूछा ही नहीं।''

''मैं हूँ सत्यकेतु और पत्नी हैं कामना।''

और जब हम स्टेशन के अंदर जाने लगे तब वह आँखें में न जाने कितना अपनापन लिये हमें निहारता रहा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

यात्रा-भीरु यात्रा से डरनेवाला **अंट-शंट** मरजी में आए ऐसा, निरंकुश **आश्वस्ति** आश्वासन, तसल्ली **वांछित** इच्छा अनुसार **इन्तजार** प्रतीक्षा **वाट** राह **अतिरिक्त** उपरांत **छेड़ना** उकसाना **खूसट** अप्रिय **अधेड़** आधेड़ उम्रका प्रौढ **हवालात** जेल **अहम बात** मुख्य बात **प्रीतिकर** मनभावन **संवेदना** पीड़ा **मसीहा** देवदूत **उबारना** बचाना, से बाहर निकालना

मुहावरे

पाला पड़ना सम्बन्ध जुड़ना **चुप्पी-सी छा जाना** शांति छा जाना, **असमंजस में पड़ जाना** द्विधा में पड़ना, क्या करूँ क्या न करूँ यह समज में न आना, **निबाह होना** घर खर्च निकलाना **उद्विग्न करना** पीड़ा देना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक को ग्वालियर क्यों जाना पड़ा?

(2) लेखक के न कहने पर भी ऑटोवाला उनका इन्तजार क्यों करने लगा?

(3) लड़कीने मोहन से घिघियाते हुए क्या कहा?

(4) मोहन लडकी से विवाह करने क्यों तैयार हो गया?

(5) थानेदार की क्या विशेषता थी?

(6) मोहनने ज्यादा पैसै लेने से क्यों इन्कार किया?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर दीजिए :**

(1) लेखकने ऑटोवाले की बात को स्वीकृति क्यों दी?

(2) मोहन की पारिवारिक स्थिति क्या थी?

(3) लड़की किस बात के लिए तैयार नहीं थी? क्यों?

(4) लेखक मोहन को बहुत बड़ा क्यों बताते हैं?

3. **विस्तार से उत्तर दीजिए :**

(1) लेखक यात्रा से क्यों ड़रते थे?

(2) मोहन का चरित्र चित्रण कीजिए।

(3) लेखक के साथ मोहन ने अपनापन कैसा जताया?

4. **निम्नलिखित विधान किसने किससे और क्यों कहा?**

(1) ''इससे विवाह करना प्रीतिकर भी होगा और मानवीय भी।''

(2) भाई हर क्षेत्र में कोई न कोई मसीहा दिखाई पड़ ही जाता है।

(3) मुझे इतना पराया न कीजिए, बाबूजी?

5. **सही शब्द चुनकर योग्य उत्तर दीजिए।**

(1) ऑटोवाले ने लेखक को नई जगह पर पहुँचा दिया, क्योंकि...

(अ) लेखक को दूसरी जगह घूमने जाना था।

(ब) वहाँ डॉक्टर हाज़िर नहीं था।

(क) डॉक्टर ने क्लीनिक की जगह बदल दी थी।

(2) बात करते हुए मोहन रुक गया और चुप्पी सी छा गई, क्योंकि...

(अ) कोई अवांछित घटना घटी थी।

(ब) नौकरी की तलाश में उसे आगरा से भटकते हुए ग्वालियर आना पड़ा।

(क) उसे एक लड़की मिल गई।

(3) लेखक को मोहन की बात कहानी-कथा सुन रहे ही ऐसी लगी, क्योंकि...

(अ) लेखक सोचने लगे कि कोई थानेदार ऐसा सहृद व्यवहार कर सकता है?

(ब) लेखक को मोहन की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।

(क) मोहन कोई कहानी सुना रहा था।

(4) मोहनने ज्यादा पैसे लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि...

(अ) मोहन चाहता था कि उसे इतना पराया न समजा जाय।

(ब) वह परिश्रम से ज्यादा पैसे लेने के पक्ष में नहीं था।

(क) वह चाहता था कि लेखक दूबारा ग्वालियर आए तो उसके ही ऑटों का उपयोग करें।

6. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) पाला पड़ना (2) असमंजस में पड़ना (3) दामन थाम लेना

7. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द दीजिए :

वांछित, परिचित, समस्या, मसीहा, प्रीति, संतोष, शोषण

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- मैं ऑटोवाला होता तो.... विषय पर छात्र अपने विचार व्यक्त करे।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- नारी सशक्तिकरण-छात्रों से एवं नारी सुरक्षा के विषय में साहित्य सामग्री का संग्रह करवाइए।
- किसी व्यक्ति का साक्षात्कार करने के लिए प्रश्नसूची तैयार करें।
- छात्रों के द्वारा किसी व्यक्ति का परिचय लिखवाइए।
- किसी घटना का रिपोर्ट तैयार करवाइए।

●

12 रानी

महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा अर्थात् 'मैं नीर भरी दु:ख की बदरी' और तुम को नींव में ढूँढा, तुममें ढूँढी पीड़ा।' कहनेवाली सहृदय, भावुक, अत्यंत संवेदनशील और समग्र नीव सृष्टि पर अनुकंपावर्षेण करनेवाली छायावादी युग की अप्रतिम रचनाकार। छायावादी युग के चार स्तंभ गिने जाते हैं- प्रसाद, पंत, महादेवी और निराला। इनमें प्रसाद के साथ सदैव इतिहास बोध रहा तो पंत प्रकृति के कोमल कांत पदावली के रचनाकार के रूप में पहचाने गये। निराला अपनी ओजस्विता और रौद्रता के लिए तो महादेवी धीर गंभीर दर्द की दास्तान सुनानेवाली कवयित्री के रूप में पहचानी गयी।

फर्रुखाबाद में (उत्तर प्रदेश) जन्मी-महादेवी सही अर्थ में एक विदूषी और प्रगल्भा नारी के रूप में समग्र जीवन जी गयी। मुख्यतया महादेवी कवयित्री ही-रही किंतु 'स्मृति की रेखाएँ' जैसी रचना के द्वारा उत्तम गद्यकार-रेखाचित्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या और कुलगुरु के पद पर रह कर शिक्षा के क्षेत्र में आपने अनुपम योगदान दिया है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ आदि आप की बहुचर्चित एवं लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

यहाँ 'रानी' नामक एक घोडी उनके दो साथी 'निक्की' और 'रोजी' के साथ आयी है- सम्मिलित है जिसका बड़ा मार्मिक और भावुकतापूर्ण शैली में चित्र अंकित किया है। ऐसा लगता है यह नेवला, यह कुत्ती और यह घोड़ी हमारे सामने ही हैं। पशु-पंछी और निर्दोष भोले ऐसे प्राणियों के प्रति महादेवीजी का स्नेह और प्रेम छलकता नज़र आता है।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टूओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया था।) पर घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा, अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमारंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा- सफेद टट्टू पर बैठोगे? 'तुम कहो, तुम कहो' के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया- सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।

पता नहीं हमारे ज्ञान के वजस्त्र स्त्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परंतु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा-सा चाकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अत: बाहर से टट्टू को लाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की उसकी देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया।

अब तो हम उस छोटे टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे तथा हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने-फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित नहीं हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है। हम सब चार-पाँच दिन उससे रुष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त ही कर ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू को माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख-दु:ख की गाथा सुनते-सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताजमहल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह वहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में वसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी, काली-स्वच्छ

और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथूने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठोंवाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परंतु इतने दीर्घ काल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती है जैसे किसी अदृश्य स्याही से लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार-बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अतः अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था अतः उसकी दीवार में एक खुली आल्मारी और कई आतेताक थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरेवाली ऐसी जीन बनवाई गई जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी-बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सबेरे भाई-बहन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ यह कार्यक्रम दोहराया जाता। परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोही प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी? अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सब के सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अतः उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूँछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हों।

रानी हम सब की शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठनेवालों को वह दुल्की चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परंतु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दु:खद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़-बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़नखटोले पर सँभाला, परंतु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।

साथियों की चीख-पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछाने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चातापभरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए।

एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यतः हम कोई भी नया कपड़ा

या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेरमुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किन प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछ-ताँछ की तब खोज आरंभ हुई पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कान को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गुड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सबेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना-चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' और रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। ये छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको पीठ पर बैठाकर दौड़नेवाली रानी का दाना-चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेटे रहते हैं।

भाई ने कहा-रानी का पेट चीरकर हम कम-से-कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें- तब बच्चे घोड़ों पर वे छोटे बहिन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा पर जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिएँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सूजा रामा अपनी कोठरी में रखता था जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बदरी बादल **अनुकंपा** दया, भावना प्रकट करना **रियासत** राज्य **ठेलमठाल** चलना **विलायत** ब्रिटैन **विस्थापित** स्थान से छुटा हुआ **अस्तबल** घोड़ों का आवास **अयाल** लगाम, बागड़ौर, **संटी** सोटी **बरामदा** बरंडा

मुहावरे

आँखों में बसना हृदय में समाना, **जवाब दे देना** अंत हो जाना, नष्ट होना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**
   (1) 'रानी' कौन-सी साहित्यिक विद्या है?
   (2) लेखिका ने रानी के अलावा और कौन-कौन से चरित्र लिए है?
   (3) लड़कों ने स्मृतिपत्र में किस अन्याय की बात लिखी थी?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए :**
   (1) रानी के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए कैसे प्रयास किये गये?
   (2) रानी की पीठ पर सवारी करने पर कौन-सी दुर्घटना घटित हुई? क्यों?

3. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) ज्ञान में वृद्धि करनेवाला

(2) बच्चे सरलता से कर सकें ऐसी प्रवृत्तियाँ

(3) घोड़े पर बैठकर की जानेवाली सवारी

4. विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

(1) अपराधी (2) प्रसन्नता (3) दंड

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रेखाचित्र 'रानी' में प्रस्तुत पालतु प्राणियों और उनकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पशु और अबोल प्राणियों-पशुओं के साथ सद्भाव और प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।' विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन करें।
- महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्र, संस्मरण 'गूँगिया', 'ठकुरीबाबा' आदि के बारे में पात्रों को जानकारी दें।

●

वर्तनी

वर्तनी को उर्दू में 'हिज्जे' और अंग्रेजी में 'Spelling' कहा जाता है। जिस शब्द में जितने वर्ण या अक्षर जिस अनुक्रम में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें उसी क्रम में लिखना ही 'वर्तनी' है।

हम वर्तनी-संबंधी कुछ जानकारियों का अभ्यास करेंगे। उन्हें लिखते एवं बोलते समय मनन करने से वर्तनी-दोष निश्चित रूप से दूर हो जाएगा-

वर्णों की लिखावट में सावधानी :

- 'ख' को 'रव' की तरह न लिखें इससे 'ख', 'रव' बनकर वर्ण से शब्द बन जाएगा और अर्थ हो जाएगा- दाना। जैसे रवादार (दानेदार)
- 'घ' पर पूरी शिरोरेखा होती है जबकि 'त' वर्गीय व्यंजन 'ध' का पूर्व का गोलवाला शिरा मुड़ा होता है और मुड़े भाग तथा शिरोरेखा के बीच रिक्त स्थान रहता है।
- इसी तरह थ, भ, य, श, क्ष और श्र की लिखावट में ऊपर से मुड़े भाग के ऊपर शिरोरेखा नहीं होती। भ के ऊपर पूरी तरह से शिरोरेखा देने से 'म' का भ्रम पैदा हो सकता है।
- निम्नांकित संयुक्ताक्षर एवं इन संयुक्ताक्षरों का जिन शब्दों में उपयोग हुआ है, ऐसे शब्दों का अध्ययन कीजिए।
  - द् + व = द्व - विद्वान, द्वार
  - द् + द = द्द - तद्दन, राजगद्दी
  - द् + म = द्म - पद्म, छद्म
  - द् + य = द्य - पद्य, विद्या
  - द् + ध = द्ध - युद्ध, प्रसिद्ध
  - द् + घ = द्घ - उद्घाटन, उपोद्घात
  - ह् + य = ह्य - बाह्य, सह्य
  - ह् + ऋ = हृ - हृदय, अपहृत
  - श् + र = श्र - श्रवण, श्रेष्ठ
  - ट् + र = ट्र - राष्ट्र, ट्रक
- संयुक्ताक्षरों का प्रयोग हुआ हो, ऐसे अन्य शब्द अपनी किताब

अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु :

पूर्ण अनुस्वार	अर्ध-अनुस्वार (चन्द्रबिन्दु)
अंत	आँत
गंध	गाँव
तंतु	ताँत
दंभ	दाँत
पंच	पाँच
हंस	हँसी

- ऊपर दिये गए उदाहरणों में अंत, दंभ, पंच इत्यादि में जिस चिह्न (.) का प्रयोग किया गया है उसे 'अनुस्वार' कहते हैं; और आँत, दाँत, पाँच इत्यादि में जिस चिह्न (ँ) का प्रयोग हुआ है, उसे अर्ध-अनुस्वार या चन्द्रबिन्दु कहते हैं।

पूर्ण अनुस्वार ङ्, ञ्, ण्, न् और म इन अनुनासिक पंचम वर्णों की सहायता से भी लिखा जाता है। इनमें से प्रत्येक अपने वर्ग के अक्षरों के साथ संयुक्त वर्ण के रूप में प्रयुक्त होता है:-

क	ख	ग	ध	....	के साथ	....	ङ
च	छ	ज	झ	....	के साथ	....	ञ
ट	ठ	ड	ढ	....	के साथ	....	ण
त	थ	द	ध	....	के साथ	....	न
प	फ	ब	भ	....	के साथ	....	म

पूर्ण अनुस्वार दो तरह से लिखा जाता है। उसके लिखने की दोनों रीतें निम्नांकित हैं :-

वर्ग के अंतिम अनुनासिक वर्ग के साथ	**अनुस्वार के चिह्न के साथ**
शङ्कर, शंङ्ख - ङ्	शंकर, शंख
अञ्जन, चञ्चल - ञ्	अंजन, चंचल
घण्टा, डण्डा - ण्	घंटा, डंडा
चन्दन, सन्त - न्	चंदन, संत

अर्धानुस्वार का उच्चारण पूरे अनुस्वार की अपेक्षा कोमल और हल्का होता है। इसे पूरे अनुस्वार की भाँति अनुनासिक वर्ण के साथ नहीं लिखा जा सकता। उदाहरण के लिए 'अंत' को हम 'अन्त' लिख सकते हैं, पर 'आँख' को 'आन्ख' नहीं लिख सकते। अतएव जहाँ अनुस्वार का उच्चारण कोमल हो और जिसे ङ्, ञ्, ण् न् और म् आदि अनुनासिक संयुक्त वर्णों से न लिखा जा सके वहाँ अर्धअनुस्वार समजना चाहिए और उसे चन्द्रबिन्दु के साथ लिखना चाहिए।

शिरोरेखा के ऊपर लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर सामान्यतया 'अनुस्वार' तथा नीचे लिखी जानेवाली मात्राओं के ऊपर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग होता है। जैसे-

शिरोरेखा के ऊपर	**शिरोरेखा के नीचे**
मैं, क्यों, हैं, उन्हें, उन्होंने, इन्हें, इन्होंने, किन्हें, किन्होंने, जिन्हें, जिन्होंने	कहाँ, आँगन, अँगना, जहाँ, गाँधी, आँधी, आँख, जाँघ, माँद, नाँद, बाँध, काँख

'श', 'ष' एवं 'स' का प्रयोग :

- यदि किसी शब्द में 'स' हो और उसके पहले 'अ' या 'आ' हो तो 'स' नहीं बदलता।
  जैसे - दस ('स' के पहले 'अ')
  पास, घास, विश्वास, इतिहास ('स' के पहले 'आ')
- यदि अ/आ से भिन्न स्वर रहे तो 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - प्रेषित, आकर्षित, विषम, भूषण, आकर्षण, हर्षित, धनुष आदि।
- 'ह' वर्ग के पूर्व 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - क्लिष्ट, विशिष्ट, नष्ट, कष्ट, भ्रष्ट, षडानन, षोडश आदि।
- 'ऋ' के बाद 'ष' का प्रयोग होता है।
  जैसे - ऋषि, कृषि, वृष्टि, कृषक, तृषित, ऋषभ आदि।

- आगे 'च' वर्ग रहने पर 'श' का प्रयोग होता है।
  जैसे - निश्चित, निश्चय, निश्छल आदि।
- यदि 'श' एवं 'ष' दोनों का साथ प्रयोग हो तो पहले 'श' फिर 'ष' का प्रयोग होगा। यदि 'स' भी रहे तो क्रमशः स, श और ष होगा।
  जैसे - विशेष, शेष, शोषण, शीर्षक, विश्लेषण, संश्लेषण आदि।

क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ का प्रयोग :

क़तल	ख़बर	ग़रीब	ज़माना	फ़कीर
क़दम	ख़र्च	ग़लत	ज़मीन	फ़र्ज
क़द्र	ख़ानदान	ग़ाफिल	ज़हर	फ़रमान
क़लम	ख़ुदा	गुस्सा	ज़िन्दगी	फ़रेब
क़ाबिल	ख़ुश	ग़ैर	नमाज़	फ़ुरसत

ऊपर दिये गए उदाहरणों को ध्यान से देखें। इनमें क़, ख़, ग़, ज़ और फ़ के बगल में नुक्ता या बिन्दी लगाई गई है। इन शब्दों के बगल में बिन्दी केवल इनके उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए लगाई जाती है। अरबी-फ़ारसी भाषा के इन शब्दों में निर्देशित वर्णों का उच्चारण कोमल और हल्का होता है।

ड़ और ढ़ का प्रयोग:

(1)	डमरु	अकड़	(2)	ढंग	गढ़
	डर	बड़ाई		ढब	पढ़ाई
	डाक	रणछोड़		ढेरी	बाढ़
	डाली	झाड़		ढोल	सीढ़ी

ऊपर दिये गए नं. (1) और (2) के शब्दों को ध्यान से पढ़िए । नुक्तावाले इन 'ड़' और 'ढ़' के संबंध में यह बात याद रखनेलायक है कि दोनों अक्षर कभी शब्द के शुरु में और अनुस्वार के बाद नहीं आते।

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के उदाहरण:

(1) 'इ' की जगह 'ई' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
ईस	इस	फीर	फिर
कीस	किस	रीहा	रिहा
जीस	जिस	लीया	लिया
चाहीए	चाहिए	बहीन	बहिन
नीकट	निकट	वीकट	विकट
कोशीश	कोशिश	विदीत	विदित
गीरना	गिरना	मीलना	मिलना
कठीनाई	कठिनाई	विकसीत	विकसित

(2) 'ई' की जगह 'इ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
चिज़	चीज़	सति	सती
नारि	नारी	स्त्रि	स्त्री
निंद	नींद	महिना	महीना

निचे	नीचे	यक़िन	यक़ीन
पिछे	पीछे	विनति	विनती
क़िमत	क़ीमत	शरिर	शरीर
तिसरा	तीसरा	गृहिणि	गृहिणी
बिमार	बीमार	स्विकार	स्वीकार
नज़दिक	नज़दीक	हारजित	हारजीत

(3) 'ऊ' की जगह 'उ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तुने	तूने	भुल	भूल
दुध	दूध	सुर्य	सूर्य
पुज्य	पूज्य	शुरु	शुरू
उपर	ऊपर	हिन्दु	हिन्दू
क़ानुन	क़ानून	मालुम	मालूम
दुसरी	दूसरी	मज़मुन	मज़मून
पुछना	पूछना	महसुस	महसूस
फ़िजुल	फ़िजूल	प्रतिकुल	प्रतिकूल
जरुरत	जरूरत	गोमुत्र	गोमूत्र

(4) 'उ' की जगह 'ऊ' की भूलें:

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तूम	तुम	पूजारी	पुजारी
तूम्हारा	तुम्हारा	सूख	सुख
पहूँचना	पहुँचना	सचमूच	सचमुच

ह्रस्व-दीर्घ की भूलों के निर्देशित उदाहरणों के अलावा कुछ और भूलों के उदाहरण और उनसे बचने के सामान्य नियम निम्नांकित हैं:

(1) जब संयुक्ताक्षर के अंत्य स्वर पर भार हो तो उसके

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कूत्ता	कुत्ता	कीश्ती	किश्ती
गूच्छा	गुच्छा	चीट्ठी	चिट्ठी
बील्ली	बिल्ली	नूस्खा	नुस्खा
सूस्त	सुस्त	लूत्फ़	लुत्फ़

(2) ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन के रूपों में दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में बदल जाती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
थालीयाँ	थालियाँ	दासीयाँ	दासियाँ
ज़िन्दगीयाँ	ज़िन्दगियाँ	पोथीयाँ	पोथियाँ
टोपीयाँ	टोपियाँ	सदीयाँ	सदियाँ

(3) संस्कृत से आये हुए तत्सम शब्दों की अंत्य 'ति' अधिकतर ह्रस्व होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
गती	गति	मती	मति
पती	पति	रीती	रीति
भक्ती	भक्ति	स्थिती	स्थिति

(4) श्रेष्ठतावाचक शब्दों का प्रत्यय 'इष्ट' की जगह 'इष्ठ' होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कनिष्ट	कनिष्ठ	धर्मिष्ट	धर्मिष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	बलिष्ट	बलिष्ठ
जयेष्ट	ज्येष्ठ	श्रेष्ट	श्रेष्ठ

(5) 'ईय' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होती है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
जातिय	जातीय	देशिय	देशीय
प्रांतिय	प्रांतीय	वर्षिय	वर्षीय
राजकिय	राजकीय	स्वर्गिय	स्वर्गीय

(6) सामान्यतया 'इक' प्रत्यय में 'इ' ह्रस्व होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
औद्योगीक	औद्योगिक	नैतीक	नैतिक
ऐच्छीक	ऐच्छिक	शारीरीक	शारीरिक
दैनीक	दैनिक	स्थानीक	स्थानिक

(7) सामान्यतया 'ईन' प्रत्यय में 'ई' दीर्घ होता है।

उदाहरण :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अर्वाचिन	अर्वाचीन	प्राचिन	प्राचीन
नविन	नवीन	कुलिन	कुलीन
पराधिन	पराधीन	स्वाधिन	स्वाधीन

प्रत्यय संबंधी भूलें :

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
उत्कर्षता	उत्कर्ष	ऐक्यता	ऐक्य / एकता
औदार्यता	औदार्य/उदारता	कार्पण्यता	कृपणता / कार्पण्य
गौरवता	गौरव / गुरुता	दारिद्रता	दरिद्रता / दारिद्रय
धैर्यता	धीरता / धैर्य	पौरुषत्व	पौरुष / पुरुषत्व
साम्यता	साम्य / समता	वैमनस्यता	वैमनस्य
सौजन्यता	सौजन्य / सुजनता	सौदर्यता	सुन्दरता / सौंदर्य

उपर्युक्त शब्दों के उदाहरण से पता चलता है कि, भाव प्रत्ययांत शब्दों के बाद प्रत्यय लगाना ठीक नहीं है।

हलन्त का प्रयोग :

- मान्/वान्/हान् प्रत्ययान्त शब्दों में हलन्त का प्रयोग अवश्य होना चाहिए ।
  जैसे - श्रीमान्, आयुष्यमान्, महान्, विद्वान्
- त्/मम्/उत् प्रत्ययान्त तत्सम शब्दों में हलन्त का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे - स्वागतम्, जगत्, परिषद्, पश्चात्, शरद्, सम्राट्, विद्युत् आदि।

ये दोनों प्रचलित हैं और सही भी :

दुकान	-	दूकान	उषा	-	ऊषा
अंजलि	-	अंजली	गरमी	-	गर्मी
सरदी	-	सर्दी	वरदी	-	वर्दी
तुरग	-	तुरंग	भुजग	-	भुजंग
बिलकुल	-	बिल्कुल	हलुआ	-	हलवा
विहग	-	विहंग	रियासत	-	रिआसत
आत्मा	-	आतमा	सोसाइटी	-	सोसायटी
कलश	-	कलस	मुस्कान	-	मुसकान
धबराना	-	धबड़ाना	एकत्र	-	एकत्रित
चाहिए	-	चाहिये	ग्रस्त	-	ग्रसित
दम्पती	-	दम्पति	जाए	-	जाये
पृथिवी	-	पृथ्वी	पिंजरा	-	पिंजड़ा
वशिष्ठ	-	वसिष्ठ	सामान्यत:	-	सामान्यतया

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप के सामने (3) का चिह्न लगाइए :**

(क)	आविष्कार ( )	आविष्क्वार ( )	आविषकार ( )	आविश्कार ( )
(ख)	पूजनीय ( )	पूज्यनीय ( )	पुजनीय ( )	पुज्यनीय ( )
(ग)	सुषोभित ( )	शुसोभित ( )	सुसोभित ( )	सुशोभित ( )
(घ)	श्रंगार ( )	शृंगार ( )	श्रृंगार ( )	श्रिंगार ( )
(ङ)	स्वास्थ ( )	सवास्थ्य ( )	स्वासथ्य ( )	स्वास्थ्य ( )
(च)	कवयित्री ( )	कवियित्री ( )	कवियत्री ( )	कवियित्रि ( )

2. **निम्नलिखित शब्दों में अशुद्ध वर्तनीवाले बीस शब्द हैं। उन्हें छाँटकर उनके सामने उनके शुद्ध रूप लिखिए :**

नैन	पीढ़ी	उलंघन	शुरु	प्रसाद	निर्दयी	शब्दकोश
कृपया	अमावश्या	दृष्टि	उसर	ऊर्जा	एच्छिक	वंदना
सहस्त्र	एश्वर्य	डमरु	संतुष्ट	बढई	एनक	हंसमुख
दिवार	अतएव	वाटिका	पढ़ाई	पाँचवाँ	अरोग्य	उद्देश्य
लडाई	बांसुरी	बुधवार	अनधिकार	श्रीमती	सन्मुख	जाग्रति

अशुद्ध वर्तनीवाले शब्द तथा उनके शुद्ध रूप :

1.	....	....	10.	....	....
2.	....	....	11.	....	....
3.	....	....	12.	....	....
4.	....	....	13.	....	....
5.	....	....	14.	....	....
6.	....	....	15.	....	....
7.	....	....	16.	....	....
8.	....	....	17.	....	....
9.	....	....	18.	....	....

3. निम्नलिखित वाक्यों में दो-दो शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। अशुद्ध शब्दों के स्थान पर शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करते हुए वाक्यों को दुबारा लिखिए :

(1) गुरूजीने छात्रों को आशीर्वाद दिया।

(2) नेताजीने औजस्वी भाषण दिया।

(3) मैने प्रातकाल घास पर औस पड़ी देखी।

(4) नोकर तोलिया लेकर आया।

(5) बूड़ा सीड़ियाँ नहीं चढ़ पाया।

(6) भारत ने औद्योगिक क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।

(7) ददीचि ने धर्म की रक्षा के लिए अपनी हड्डीयाँ दे दी।

(8) व्यापार में घाटा होने के कारण वह टनटनगोपाल हो गया है।

(9) हमें दुसरों के कार्य में हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिए।

(10) उसकी अलोचना सुनकर मुझे कष्ट हुआ।

●

13 नीति के दोहे

रहीम

(जन्म : लगभग 1553 ई. : निधन : सन् 1626 ई.)

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीमखान खाना था। उनके पिता का नाम बैरमरबाँ था। जो अकबर के अभिभावक थे। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम की कार्यक्षमता और बुद्धिमत्ता से अकबर बहुत प्रभावित थे और इसीलिए उन्होंने रहीम को अपने दरबार का महामंत्री का सर्वोच्च पद प्रदान किया था। रहीम संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के विद्वान थे। दानी के रूप में बहु सुविख्यात है। जीवन के व्यावहारिक अनुभवों को उन्होंने अपनी 'सतसई' में व्यक्त किया है।

प्रथम दोहे में परहित की भावना, दूसरे दोहे में सही संबंध की रीत और सच्चा प्यार, तीसरे दोहे में छोटी चीज़ का महत्त्व, चौथे दोहे में सही दीनबंधु की बात की गई है। पाँचमें दोहे में कड़वे वचन बोलनेवाले की स्थिति का वर्णन है। छठवें दोहे में उत्तम व्यक्ति की प्रवृत्ति, सातवें दोहे में बिगड़ी हुई बात को छोड़ देने की, आठवें दोहे में धैर्य का महत्त्व तथा अंतिम दोहे में किसीसे माँगना नहीं चाहिए - इस बात को उद्धृत किया है।

तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, सम्पत्ति सुचहिं सुजान ॥1॥

कहिं रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत॥2॥

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तरवारि॥3॥

दीन सबनको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय॥4॥

खीरा को मुँह काटिकै, मलियत नोन लगाय।
रहिमन करुए मुखन की, चहिए यही सजाय ॥5॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥6॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगर दूध को, भथे न माखन होय॥7॥

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥8॥

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनसे पहिले वे मुएँ, जिन मुख निकसत नाहिं॥9॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

तरुवर वृक्ष **परकाज** दूसरों के काम **बिपत्ति** आपत्ति **मीत** प्यारा **लघु** छोटा **तरवारि** तलवार **दीन** गरीब **सम** समान **खीश** ककड़ी **करुण** करुए **भुजंग** साँप **बिगरी** बिगड़ी हुई **थोरे** थोड़े **निकसत** निकलना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) रहीम के अनुसार संपत्ति का महत्त्व क्या है?
   (2) छोटों का तिरस्कार क्यों नहीं करना चाहिए?
   (3) सुई का काम कौन नहीं कर सकता?
   (4) उत्तम प्रवृत्ति का क्या लक्षण हैं?
   (5) सीसे क्यों नहीं चाहिए?
   (6) माँगने के बारे में रहीम क्या कहते हैं?
2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**
   (1) वृक्ष और सरोवर के उदाहरण से रहीम हमें क्या समझाते हैं?
   (2) रहीम कड़वे मुखवाली मनुष्य की प्रकृति को कैसे समझाते हैं?
   (3) 'लाख प्रयत्न करने पर बिगडी हुई बात नहीं बनती' - ऐसा रहीम किस उदाहरण से समजाते हैं ?
3. **आशय स्पष्ट कीजिए :**
   (1) 'रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।'
   (2) चंदन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रहीम के दोहो में निष्पन्न नीतिविषयक बात को चुनकर सुवाच्य अक्षरों में लिखिए और स्पष्ट कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- रहीम के अन्य दोहे का संग्रह कीजिए।

●

14	# युग और मैं

नरेन्द्र शर्मा

कवि नरेन्द्र शर्मा का जन्म 1913 ई. में जहाँगीरपुर (बुलंदशहर) में हुआ। शिक्षा प्रयाग विश्व विद्यालय में एम.ए. तक हुई। वे आकाशवाणी के विविध भारती कार्यक्रम के प्रधान के रूप में सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

उनका नाम प्रगतिवादी कवियों में भी लिया जाता है, जो अंशत: उचित भी है। नरेन्द्र शर्मा के कवि जीवन का विकास भी सुमित्रानंदन पंतजी की तरह तीन युगों में रहा है। वे पहले प्रेम और विरह के छायावादी गीतकार रहे, फिर प्रगतिवादी कवि के रूप में और अंत में अरविंदवादी दार्शनिक के रूप में। उनके कविता संकलनों में प्रमुख हैं- प्रभातफेरी, प्रवासी के गीत, अग्निशस्य, रक्तचंदन, लालनिशान, पलाशवन आदि कवितासंग्रहों के अतिरिक्त नरेन्द्रजी का एक कहानीसंग्रह भी है- 'कड़वी मीठी बातें' उनकी कई कविताओं में तत्कालीन समय की वेदना प्रतिबिंबित है।

'युग और मैं' कविता में देश में जो विनाशक वातावरण पैदा हुआ, बस्तियाँ उजड़ने लगीं, मानवता जख्मी हुई, इस की कवि को असह्य पीड़ा है। सारी दुनिया की पीड़ा के सामने कवि को अपनी पीड़ा नगण्य लगती है। मनुष्य को धरती पर स्वर्ग निर्मित करने के लिए परमात्मा ने हाथ दिए हैं, पर अपने में देवत्व पैदा करने का काम अधूरा छोड़कर मनुष्य आत्मघाती बनकर एक-दूसरे का पराभव कर जगत के वैभव को तहस-नहस कर रहा है, इसकी वेदना 'युग और मैं' कविता में अभिव्यक्त हुई हैं।

उजड़ रहीं अनगिनत बस्तियाँ, मन, मेरी ही बस्ती क्या!
धब्बों से मिट रहे देश जब, तो मेरी ही हस्ती क्या!
बरस रहे अंगार गगन से, धरती लपटें उगल रही,
निगल रही जब मौत सभी को, अपनी ही क्या जाय कही?
दुनियाँ भर की दु:ख कथा है, मेरी ही क्या करुणा कथा!

जाने कब तक धाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!
खौल रहे हैं सात समुन्दर, डूबी जाती है दुनिया
ज्ञान थाह लेता था जिस से, ग़र्क हो रही वह दुनिया!
डूब रही हो सब दुनिया, जब, मुझे डूबता ग़म तो क्या!

हाथ बने किसलिये? करेंगे भू पर मनुज स्वर्ग निर्माण!
बुद्धि हुई किस लिए? कि डाले मानव-जग-जड़ता में प्राण!
आज हुआ सबका उलटा रुख, मेरा उलटा पासा क्या!
मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़, कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझ से छूटे तो क्या!

एक दूसरे का अभिभव कर, रचने एक नये भव को।
है संघर्ष-निरत मानव अब, फूंक जगत-गत वैभव को
तहस-नहस हो रहा विश्व, तो मेरा अपना आपा क्या!

शब्दार्थ और टिप्पणी

धब्बा दाग, कलंक **हस्ती** अस्तित्व **लपटें** ज्वालाएँ **समता** समानता **व्यथा** दुःख, पीड़ा **रूख** वर्तन, व्यवहार **निखिल** सारी, संपूर्ण **अभिभव** आदर **भव** संसार, दुनिया **वैभव** संपत्ति **आपा** अभिमान

मुहावरे

गर्क होना डूब जाना **तहस-नहस होना** नष्ट होना **पासा उलटा पड़ना** परिस्थितियाँ विपरीत होना

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :**

   (1) प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।

   (2) गगन और धरती से क्या हो रहा है?

   (3) सात समंदर में क्या हो रहा है?

   (4) काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।

2. **संक्षेप में उत्तर लिखिए :**

   (1) बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं?

   (2) ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है?

   (3) मानव की क्या स्थिति हो गयी है?

3. **सविस्तार उत्तर दीजिए :**

   (1) कवि के हृदय में कैसी व्यथा है?

   (2) 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।

4. **संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :**

   (1) मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
   काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
   सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या!

   (2) जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
   जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
   सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

5. **विरोधी शब्द लिखिए :**

   हस्ती, अंगार, समुंदर

6. **निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

   अनगिनत, गगन, दुनिया, निखिल, तहस-नहस, आपा

7. **ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?**

जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हत्याएँ हो रही हों।

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- हमारे आसपास परिस्थिति जब विषम हो गयी हो, हमें क्या करना चाहिए? इस विषय पर चर्चा-विमर्श कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- पंडित नरेन्द्र शर्माजी की अन्य कृतियों के बारे में छात्रों को परिचित करवाइये।

●